© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 9 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099
Themed Section : Education

# शिक्षा में मानव मूल्य और व्यावसायिक नैतिकता : आवश्यकता और महत्व

**डॉ. शिवराज कुमार**
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, शिक्षक शिक्षा विभाग।
एन. एम. एस. एन. दास कॉलेज, बदायूँ, उत्तर प्रदेश।

**सारांश–** मूल्य और नैतिकता किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास का सही परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। यह एक राष्ट्र, एक धर्म, एक जलवायु और एक दर्शन की संपत्ति नहीं है, यह इन सभी क्षेत्रों से आगे निकल जाता है इसलिए यह चरित्रा में सार्वभौमिक है, जितना कि यह दुनिया भर में बिखरे हुए मनुष्यों के कल्याण से संबंधित है। सुकरात सही थे जब उन्होंने सोचा था कि 'ज्ञान गुण है'। सारा ज्ञान सद्गुणों के निर्माण में समाप्त होना चाहिए। गुणों के बिना ज्ञान न केवल समाज के लिए बेकार है बल्कि समाज के लिए भी विनाशकारी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक मूल्य और नैतिक आधारित समाज के लिए किसी प्रकार की 'आध्यात्मिक चिकित्सा' की आवश्यकता होती है और इस आवश्यकता को शिक्षा के माध्यम से काफी हद तक पूरा किया जा सकता है।

**मुख्य शब्द–** शिक्षा, मानव, मूल्य, व्यावसायिक, नैतिकता, महत्व, राष्ट्र, ज्ञान, कल्याण।

शिक्षा में मानव मूल्यों के बारे में, चौथी शताब्दी ईसा पूर्व, कौटिल्य (चाणक्य / विष्णुगुप्त) ने बताया था, जो न केवल भारत के सबसे महान राजनीतिक विचारकों में से एक हैं, बल्कि दुनिया के भी महान राजनीतिक विचारकों में से एक हैं, जिन्होंने अविस्मरणींय कार्य 'अर्थशास्त्रा' पुस्तक में दिए हैं। मौर्य ने कहा कि वे व्यक्तिगत और राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति इतने दृण थे कि उन्होंने अपने काम के लिए कभी भी आधिकारिक लेखन उपकरण का इस्तेमाल नहीं किया। धर्म प्रचारकों और अध्यात्मवादियों के अलावा, अर्थशास्त्री, शिक्षकों, मानवतावादियों, दार्शनिकों, राजनीतिक नेताओं, मनोवैज्ञानिकों, समाज सुधारकों, समाजशास्त्रियों और विचारकों ने 'मूल्य' की अवधारणा के अर्थ और आयामों पर विचार किया है। हालांकि उनके विचार व्यापक रूप से भिन्न हैं लेकिन वे सभी व्यक्तिगत, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर मूल्यों के महत्व पर जोर देते हैं।

अवधारणा पर तमाम लोगों के विचारों को देखते हुए, प्रसिद्ध दार्शनिक ए.सी. गार्नेट ने ''इन रिलिजन एंड मोरल लाइफ (1955)'' कहा कि 'मूल्य' शब्द की अस्पष्टता के कारण, जहां प्रासंगिक अर्थ स्पष्ट है, को छोड़कर, इसे टाला जाना चाहिए। इस संदर्भ में, मानव प्रकृति के आगे के अनुसंधान (1982) में ए. मास्लो ने कहा, ''मूल्य कई तरह से परिभाषित होते हैं और अलग–अलग लोगों के लिए अलग–अलग मायने रखते हैं। वास्तव में, यह अर्थ की दृष्टि से इतना भ्रमित करने वाला है कि मुझे विश्वास है कि हम जल्द ही इस शब्द की अधिक सटीक परिभाषा खोज लेंगे। ''

उपर्युक्त दृष्टिकोण को उद्धृत करने के बाद, यह देखा गया है कि मूल्य मानवीय विचारों और कार्यों में इतनी गहराई से अंतर्निहित हैं कि अंतर्निहित मूल्यों के सार को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसी को ध्यान में रखते हुए कुछ विचारकों के विचार यहां दिए गए हैं।

- जॉन डेवी (1948) मूल्य को इस रूप में देखते हैं, ''मूल्य का अर्थ मुख्य रूप से पुरस्कार देना, सम्मान करना, मूल्यांकन करना और अनुमान लगाना है। इसका अर्थ है किसी चीज को संजोना, उसे पकड़ना और किसी चीज की तुलना में प्रकृति और मूल्यों की मात्राा पर निर्णय पारित करने का कार्य। ''

- सी.एफ. क्लूकोहन (1959) के शब्दों में ''मूल्य एक अवधारणा है, निहित या'' उपलब्ध साधनों और कार्रवाई के अंत से, चयन को प्रभावित करने वाले वांछितों के समूह की, अंतर्निहित विशिष्टता या विशेषताओं के समूह की।
- शिक्षा का शब्दकोश (1959) मूल्यों को परिभाषित करता है ''ऐसी चीजें जिनमें लोग रुचि रखते हैं, वे चीजें जो वे बनना चाहते हैं, या अनिवार्य, पूजा, या आनंद के रूप में महसूस करते हैं।
- टी.पैटर्न पार्सन्स (1960) का मानना है, ''मूल्य साझा प्रतीकात्मक का एक तत्व है'' प्रणाली जो स्थिति में आंतरिक रूप से खुले अभिविन्यास के विकल्पों में से, चयन के लिए एक मानदंड या मानक प्रदान करती है।''

**मानव मूल्यों के लिए शिक्षा का अर्थ**

मानव मूल्यों के लिए शिक्षा का तात्पर्य उस शैक्षिक कार्यक्रम से है जो समाज की भलाई और व्यक्ति के अच्छे जीवन के लिए उसके संवैधानिक रूप में परिकल्पित समाज की दृष्टि को, साकार करने के लिए तैयार है। इसमें व्यक्तित्व विकास के सभी पहलुओं को शामिल किया गया है– सौंदर्य, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक। मानव मूल्यों के लिए शिक्षा की मुख्य विशेषताएं हैं–

- मूल्य शिक्षा एक व्यापक प्रक्रिया है।
- मूल्य शिक्षा प्रत्यक्ष और साथ ही साथ अप्रत्यक्ष रूप से उचित आदतों, उचित दृष्टिकोण, संवेदनशीलता और शिक्षार्थियों के चरित्रा के विकास की एक प्रक्रिया है।
- मूल्य शिक्षा 'प्रत्येक' शिक्षार्थी की भलाई से संबंधित है और सामाजिक और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के एक शक्तिशाली साधन के रूप में सेवा करने के लिए 'सम्पूर्ण' शिक्षार्थी का निर्माण करती है।
- मूल्य विकास की प्रक्रिया कई प्रकार से प्रभावित होती है, जैसे पर्यावरणीय कारक–घर या परिवार, स्कूल, सहकर्मी समूह, समुदाय, मीडिया और समाज के सामान्य लोकाचार।

**मानव मूल्यों के विकास में विद्यालय की भूमिका**

मूल्य व्यक्तियों के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण तत्व है जो उनके विचार और व्यवहार को अचेतन तरीके से प्रभावित करता है। वे नियामक मानक हैं जिनके द्वारा कार्रवाई के वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के बीच चुनाव में मनुष्य प्रभावित होता है। इसलिए, यह बहुत आवश्यक है कि शिक्षा छात्राों में ऐसे मूल्यों का विकास करे कि वे एक धरोहर बनें और उन्हें एक आदर्श व्यक्ति बनने के लिए मार्गदर्शित करें, जो स्वयं की सेवा से ऊपर समाज की सेवा को स्थान देते हैं।

भारत के प्रमुख राजनेताओं ने कहा है, ''राष्ट्रीय चरित्रा वह आधारशिला है जिस पर हमारे सार्वजनिक मामलों का भाग्य और भविष्य टिका है, न कि यह 'वाद'। यह राष्ट्रीय चरित्रा पर निर्भर करता है, और वास्तव में, व्यक्तिगत शुद्धता है। इससे पहले कि हम राष्ट्रीय मामलों में सुधार की आशा कर सकें, व्यक्तिगत ईमानदारी को अस्तित्व में लाया जाना चाहिए।

यदि भारतीय राजनीति और प्रशासन के सूखे क्षेत्रा को ताजा, हरा–भरा जीवन प्राप्त करना है और विकसित होना है, तो हमें राष्ट्रीय चरित्रा में शुद्धता के मानसून की आवश्यकता है। और मानसून में छोटी–छोटी बूंदें गिरती हैं और बारिश बनाने के लिए एकजुट होती हैं। चरित्रा की व्यक्तिगत शुद्धता ही सूखे खेत को पुनर्जीवित कर सकती है, आइए फिर से देखें जल्दी से अपना चरित्रा हासिल करो और सब ठीक हो जाएगा जैसे– राजनीति, प्रशासन और आर्थिक स्थिति आदि।'' यह उपदेश अब विशेष महत्व रखता है जब मूल्यों की प्रगति की गति भौतिकवाद की प्रगति की गति से पिछड़ गई है।

एक नैतिक निर्देश समिति (1959) ने नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को पढ़ाने की आवश्यकता को इस प्रकार समझायाः हमें नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के शिक्षण पर विशेष जोर देना होगा। नैतिक मूल्य विशेष रूप से विभिन्न परिस्थितियों में मनुष्य के प्रति मनुष्य के आचरण को संदर्भित करते हैं जिसमें मनुष्य घर में, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्राों में और बाहरी दुनिया के

जीवन में आम तौर पर एक साथ आते हैं। यह आवश्यक है कि बचपन से ही हममें नैतिक मूल्यों का समावेश हो। हमें पहले घर को प्रभावित करना होगा। हमें डर है कि हमारे घर वह नहीं हैं जो होने चाहिए। घर में शुरुआती वर्षों में मन और शरीर दोनों की आदतें बनी रहती हैं और बाद में हमारे जीवन को प्रभावित करती हैं। अच्छे संस्कार नैतिक शिक्षा का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यह कोई असामान्य बात नहीं है कि जब लोग वर्षों के बंधन के बाद अचानक स्वतंत्राता प्राप्त कर लेते हैं, तो वे स्व–इच्छाधारी, अभिमानी और अविवेकी होने के लिए प्रवृत्त होते हैं। ऐसी स्थितियों में अच्छे शिष्टाचार आसानी से दूर हो जाते हैं और युवा उपद्रवी होते हैं और स्वतंत्राता की पहली लहर व्यक्त करते हैं।

अच्छे शिष्टाचार के महत्व को कम नहीं किया जा सकता है। अच्छे संस्कार हम पर उचित संयम लाएंगे और हमारे शब्दों में कठोरता और हमारे व्यवहार में अशिष्टता को दूर करेंगे। अच्छे संस्कार वास्तव में उस तेल की तरह होते हैं जो मानव समाज की मशीन को सुचारू रूप से चलाने में मदद करता है। हम अपने शिष्टाचार को तेजी से खोते जा रहे हैं और यह आवश्यक है कि हम उन्हें पुनः प्राप्त करें। स्कूल के छात्रों के बीच मूल्यों को शामिल करने की परम आवश्यकता है। जेसी वर्मा ने ''स्व विकास के लिए शिक्षा'' (1983) में निम्नलिखित मूल्यों का सुझाव दिया है।

- सार्वजनिक संपत्ति की देखभाल
- स्वच्छता
- सहकारिता
- दूसरों का विचार
- आजादी
- कड़ी मेहनत
- ईमानदारी
- अपने देश के लिए प्यार
- न्याय
- अहिंसा
- वैज्ञानिक स्वभाव
- धर्मनिरपेक्षता
- आत्म–अनुशासन
- लोगों की सेवा
- टीम भावना
- सत्य
- और मूल्य उन्मुख स्कूल जलवायु

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली द्वारा आयोजित मूल्य शिक्षा (1986) पर एक सम्मेलन ने निम्नलिखित मूल्यों की पहचान की, जिन्हें स्कूल के माहौल का निर्माण करना चाहिएः

- व्यक्ति का सम्मान
- प्रतिस्पर्धा के बजाय सेवा के लिए शिक्षा
- खुलापन, स्वतंत्राता, लचीलापन

- मानव संबंध
- अधिकतम सहभागिता
- संवेदनशीलता और जागरूकता
- एक दूसरे के लिए चिंता
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैज्ञानिक स्वभाव
- ईमानदारी और अखंडता
- समय का मूल्य
- परिपक्व स्व
- आत्म–स्वीकृति, आत्म–जागरूकता, आत्म–विश्वास
- क्षमा की ओर ले जाने वाली समझ
- भगवान के साथ रिश्ता
- व्यक्तिगत लेकिन सामाजिक रूप से जिम्मेदार
- काम की नैतिकता
- श्रम की गरिमा
- विश्वास
- निडरता
- नैतिक साहस
- सहिष्णुता/अंतर की स्वीकृति
- उपदेश देने से पहले अभ्यास करें
- दया
- सिर, हृदय, हाथ का प्रयोग
- संवर्धन
- देश प्रेम
- संचार
- पर्यावरण संरक्षण
- न्याय
- विश्व और अंतरराष्ट्रीय समझ के लिए एक्सपोजर
- एकीकृत विकास
- कर्मचारी विकास
- चरगाह की देखभाल
- टीम भावना

- अभिभावक–शिक्षक संबंध
- विकसित संभावनाएं
- आशावाद, विश्वास और आशा
- दृष्टि और उद्देश्य की भावना
- आजीवन सीखनेवाला
- नवीनता और साधन संपन्नता
- रचनात्मकता और पहल
- अपनेपन की भावना
- गर्व की भावना
- जोखिम लेने की क्षमता
- साहस की भावना
- समर्पण और प्रतिबद्धता
- सादगी और तपस्या
- मानक निर्धारित करने और उन पर टिके रहने की क्षमता
- अनुकूलनशीलता
- किसी की सीख पर गौर।

**मूल्यों के लिए शिक्षा का उद्देश्यः यूनेस्को परियोजना**

यूनेस्को–एनआईईआर एशियाई देशों में नैतिक शिक्षा पर संयुक्त रिपोर्ट (1980) में मूल्य (नैतिक) शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य सूचीबद्ध हैं:

- बच्चे के व्यक्तित्व का उसके शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलू में पूर्ण विकास।
- अच्छे शिष्टाचार और जिम्मेदार और सहकारी नागरिकता का समावेश।
- व्यक्ति की गरिमा और मौलिक मानवाधिकारों की पवित्राता के लिए सम्मान विकसित करना।
- देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना का समावेश। सोचने और जीने का एक लोकतांत्रिक तरीका विकसित करना।
- विभिन्न धार्मिक आस्थाओं के प्रति सहिष्णुता और समझ का विकास करना।
- सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवीय भाईचारे की भावना का विकास करना
- बच्चों को कुछ अलौकिक शक्ति और व्यवस्था में विश्वास करने में मदद करना जो इस ब्रह्मांड और मानव जीवन को नियंत्रित करने के लिए माना जाता है (यह विश्वासियों के समुदायों से संबंधित है)
- ध्वनि नैतिक सिद्धांतों के आधार पर बच्चों को नैतिक निर्णय लेने में सक्षम बनाना।

**नैतिकता और मूल्यों के उद्देश्य**

शिक्षा में नैतिक और सामाजिक मूल्यों को विकसित करने का परिणाम, जिसकी ऊपर चर्चा की गई है–आत्म–विश्वास, आत्म–नियंत्रित (अनुशासन), खुश और हंसमुख, भावनात्मक रूप से स्थिर, उत्पादक, दूसरों में अच्छाई की सराहना करने वाला,

रचनात्मक, मौन (जब भी आवश्यक हो), सामाजिक रूप से जिम्मेदार, सामाजिक रूप से समायोजित, निडर, निष्पक्ष, वफादार (दृढ़) और देशभक्त, के गुंणो का व्यक्ति में निर्माण एवं विकसित करना।

**मानव मूल्य और व्यावसायिक नैतिकता का महत्व**

भारत के मुख्य प्रतिपादक के रूप में यह एक दर्शन और जीने का तरीका है, 'मूल्य और नैतिक उन्मुख शिक्षा' भारतीय शिक्षा में एक नया विषय नहीं है। यह ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के साथ भारतीय मिट्टी में गहरी जड़ें जमा चुका है। यद्यपि इसकी जड़ें नैतिक, आध्यात्मिक और धार्मिक शिक्षा में खोजी जा सकती हैं, यह उनमें से कोई भी अलग नहीं है, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक क्षेत्रों में आज की पेचीदगियों में इसके प्रदर्शन के व्यावहारिक पूर्वाग्रह के साथ सोच का सबसे उन्नत चरण है।

प्रत्येक देश अपनी अनूठी सामाजिक–सांस्कृतिक पहचान को व्यक्त करने, बढ़ावा देने और समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपनी शिक्षा प्रणाली विकसित करता है। मूल्य उपलब्धियों के लिए निर्धारित लक्ष्य हैं और वे हमारी सभी गतिविधियों को संज्ञानात्मक, प्रभावशाली और रचनात्मक रूप से प्रेरित, परिभाषित करते हैं।

मूल्य और नैतिकता में सबसे रचनात्मक कारक इसका उद्देश्य है जो व्यक्ति को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए और व्यवहार के लिए उचित सीमा निर्धारित करते हुए शक्तियों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करता है। मूल्यों और नैतिकता की शिक्षा लोगों और आदर्शों के लिए सकारात्मक भावनाओं को बनाने और मजबूत करने में मदद करती है। इसे सामाजिक जीवन में सक्रिय भागीदारी और सामाजिक नियमों की स्वीकृति के लिए व्यक्तियों को तैयार करना चाहिए।

**निष्कर्ष–** मार्टिन लूथर किंग ने कहा, ''हमारे पास गाइडेड मिसाइलें और गुमराह आदमी हैं। निजी और सार्वजनिक जीवन में नैतिकता का संचार करके इसे बेहतरी के लिए बदला जाना चाहिए।''

अगस्त–सितंबर 2000 में संयुक्त राष्ट्र में आयोजित धार्मिक और आध्यात्मिक नेताओं की प्रेरक सभा को संबोधित करते हुए, संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने उनसे 'अंदर देखने' और इस बात पर विचार करने का आह्वान किया कि वे ''न्याय, समानता, मेल–मिलाप और शांति'' को बढ़ावा देने के लिए क्या कर सकते हैं।

मूल्य और नैतिकता किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास का सही परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। यह एक राष्ट्र, एक धर्म, एक जलवायु और एक दर्शन की संपत्ति नहीं है, यह इन सभी क्षेत्रों से आगे निकल जाता है इसलिए यह चरित्रा में सार्वभौमिक है, जितना कि यह दुनिया भर में बिखरे हुए मनुष्यों के कल्याण से संबंधित है। सुकरात सही थे जब उन्होंने सोचा था कि 'ज्ञान गुण है'। सारा ज्ञान सद्गुणों के निर्माण में समाप्त होना चाहिए। गुणों के बिना ज्ञान न केवल समाज के लिए बेकार है बल्कि समाज के लिए भी विनाशकारी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक मूल्य और नैतिक आधारित समाज के लिए किसी प्रकार की 'आध्यात्मिक चिकित्सा' की आवश्यकता होती है और इस आवश्यकता को शिक्षा के माध्यम से काफी हद तक पूरा किया जा सकता है।

## संदर्भ


1. Das, Sayan (2008).Value based education. Retrieved on September 23,2010 from http://theviewspaper.
2. Gawande, E.N.,(2002). Value oriented education, Vision for better living.
3. Kumar, Pradeep (2009). Role of value education in contemporary society.
4. http://www.indiaedu.com/articles/value-education.html
5. http://www.educationzing.com/india/value-education.html
6. http://wiki.answers.com/professionalethics/education